या प्राकृतिक विज्ञान, मनोविज्ञान आदि) जड़-चेतन के द्वैत को सत्य मानकर ही निष्कर्षों की स्थापना करते हैं। इसलिए इस वस्तुगत मान्यता को स्वीकार करना आवश्यक है।

समीक्षा — द्वैतवाद साधारण अनुभव की दृष्टि से भले-ही सही सिद्धान्त प्रतीत होता है। किन्तु इसमें कुछ तार्किक असंगतियाँ हैं।

(i) जड़ एवं चेतन को मौलिक रूप से भिन्न मानने से विश्व की उत्पत्ति की व्याख्या सही नहीं हो पाती। सांख्य दर्शन में विश्व के उत्पत्ति की व्याख्या जिस रूप में की गयी है, वह तर्कसंगत नहीं है।

(ii) चेतन ज्ञाता एवं जड़ ज्ञेय के बीच सम्बन्ध की स्थापना कैसे होती है — इसकी तर्कयुक्त व्याख्या द्वैतवाद नहीं कर पाता।

(iii) विश्व में व्याप्त सामंजस्य तथा मन-शरीर सम्बन्ध को सुसंगत रूप में यह सिद्धान्त प्रस्तुत नहीं कर पाता। इसलिए मूल रूप से दो तत्वों को स्वीकार करना कठिन है।

इसप्रकार साधारण अनुभव के अनुकूल होने पर भी द्वैतवादी सिद्धान्त तर्कसंगत रूप में विश्व की व्याख्या नहीं कर पाता।

——— X ——— X ———

किन्तु मूल रूप से ये अद्वैतवाद के समर्थक हैं।

मूल तत्त्व के स्वरूप एवं संख्या की दृष्टि से द्वैत का स्पष्ट उदाहरण भारतीय विचारधारा में सांख्य दर्शन में मिलता है। इसमें प्रकृति एवं पुरुष – दो तत्त्वों को मौलिक माना गया है। पुरुष स्वरूपतः अनेक है तथा प्रकृति एक है। दर्शन एवं मोक्ष के उद्देश्य से पुरुष एवं प्रकृति का संयोग होता है। पुरुष की उपस्थिति मात्र से प्रकृति में विकास की प्रक्रिया प्रारम्भ होती है। इस दर्शन में पुरुष अनेक हैं, किन्तु उनकी सत्ता व्यावहारिक है। परमार्थ के तल पर पुरुष एक ही है। इसलिए संख्या एवं स्वरूप की दृष्टि से सांख्य दर्शन संगत द्वैतवादी सिद्धान्त है।

द्वैतवाद के समर्थक प्रमाण

(1) द्वैतवाद का सबसे सबल प्रमाण हमारा साधारण अनुभव है। जड़ एवं चेतन के रूप में परस्पर विरोधी तत्त्वों की हमें अनुभूतियाँ होती हैं। एक ओर भावना, स्मृति, कल्पना आदि चेतन हैं, तो दूसरी ओर कलम, कागज, पेन्सिल आदि जड़ तत्त्व हैं।

(2) द्वैतवाद के समर्थकों का मानना है कि जड़ एवं चेतन परस्पर विरोधी तत्त्व हैं। पारमार्थिक दृष्टि से इन्हें पृथक् स्वीकार किये बिना विश्व की संगत व्याख्या नहीं हो सकती। भौतिकवाद जड़ को मूल तत्त्व स्वीकार कर तथा प्रत्ययवाद चेतना को मूलाधार मानकर विश्व की समुचित व्याख्या नहीं कर पाता। दूसरे विरोधी तत्त्व का पहले से विकसित होना या उसमें पूर्व-निहित होना सम्भव नहीं है।

(3) साधारण ज्ञान में ज्ञाता एवं ज्ञेय के स्वरूप का भेद स्पष्ट दिखलायी पड़ता है। इसलिए ज्ञान के विश्लेषण के लिए भी इन दोनों तत्त्वों को स्वीकार करना आवश्यक है। ज्ञाता चेतन है तथा ज्ञेय अचेतन जिसके लिए दो मूलभूत आधारों का होना जरूरी है।

(A) विभिन्न विज्ञान (जैसे – रसायनशास्त्र, भौतिकी, शरीर

Class — T.D.C. Part II
Paper — II
तत्वमीमांसा
(Metaphysics)
Topic — द्वैतवाद
(Dualism)

Dr Poonam Sharma
Assistant Professor
Deptt of Philosophy
R.N. College,
Hajipur.

द्वैतवाद
(Dualism)

विश्व में दो प्रकार के तत्व दिखलायी पड़ते हैं — (i) जड़ (Matter) तथा (ii) चेतन (Consciousness)। साधारण ज्ञान की दृष्टि से मूल तत्व की प्रकृति में ही द्वैत है। द्वैतवाद उस सिद्धान्त को कहते हैं जो मूल तत्व के स्वरूप में द्वैत स्वीकार करता है। जड़ एवं चेतन — दोनों ही तत्व मौलिक हैं तथा किसी को दूसरे में बदलने की आवश्यकता नहीं है। इन दोनों तत्वों से विश्व की संरचना हुई है। द्वैतवाद के अनेक रूप हो सकते हैं —

(i) मूल तत्व का स्वरूप द्वैत हो, किन्तु उसकी संख्या एक हो, (ii) मूल तत्व का स्वरूप एवं उसकी संख्या दोनों ही द्वैत हो तथा (iii) मूल तत्व का स्वरूप द्वैत हो, किन्तु उसकी संख्या अनेक हो। दार्शनिक क्षेत्र में द्वैतवाद की संज्ञा उस सिद्धान्त को दी जाती है जिसमें मूल तत्व स्वरूप एवं संख्या दोनों दृष्टियों से द्वैत हो।

कुछ विचारक प्रथम भेद के अन्तर्गत रामानुजाचार्य के सिद्धान्त को स्वीकार करते हैं, किन्तु यह असंगत है। उन्होंने मूल तत्व के स्वरूप को आन्तरिक रूप से द्वैत माना है। मूल तत्व सगुण ब्रह्म है जिसमें चित् एवं अचित् का स्वगत भेद होता है। इसलिए उनका मत निरपेक्ष अध्यात्मवाद का उदाहरण है, द्वैतवाद का नहीं। उनके अनुसार मूल तत्व ब्रह्म विशिष्ट रूप से अद्वैत है, इसलिए उनका मत विशिष्टाद्वैत कहलाता है।

दूसरे भेद के अन्तर्गत कुछ विचारक प्लेटो एवं अरस्तू के सिद्धान्तों को रखते हैं। प्लेटो ने सर्वोच्च शुभ (Idea of the Good) तथा अरस्तू ने आकार (Form) को मूल तत्व माना है। ये विचारक विश्व की व्याख्या के लिए जड़-तत्व (Matter) को स्वीकार करते हैं,